Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 27. 11. 2015 मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि यदि इस्लाम का परिचय कराना हो तो मस्जिद बना दो, लोगों का ध्यान आकर्षित होगा। यह बात बड़ी शान के साथ पूरी होती हमें प्रत्येक स्थान पर दिखाई देती है और जब इंसान देखता है कि किस प्रकार लोगों की काया पलटी है तो आश्चर्य होता है।

तशह्हुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

जैसा कि दोस्त जानते हैं कि पिछले दिनों मैं जापान, वहाँ की पहली मस्जिद के उद्घाटन के लिए गया था। वहाँ यदि वर्तमान प्रस्थितियों को देखा जाए तो यह बड़ा कठिन काम था कि मस्जिद बन सके। हमारे वकील जो जापानी हैं मुझे मिले और कहने लगे कि मस्जिद का निर्माण आपको मुबारक हो परन्तु मैं अब भी सोचता हूँ तथा चकित रह जाता हूँ और विश्वास नहीं होता कि इस इलाक़े में आपको मस्जिद बनाने की अनुमति मिल गई। कहने लगे मैं आपके लिए केस तो लड़ रहा था परन्तु मुझे कोई आशा नहीं थी कि सफलता मिले। इसी लिए एक अवसर पर मैंने जमाअत के प्रबन्धन समीति को कह दिया था कि इस मामले को छोड़ दें तो अच्छा होगा। परन्तु जमाअत के लोगों का विश्वास भी अद्भुत है। उन्होंने कहा कि तुम प्रयासरत् रहो, यह स्थान हमें इन्शाअल्लाह तआला मिलेगा तथा मस्जिद भी बनेगी। कहने लगे आज यह मस्जिद जो है, यह मेरे लिए तो निःसन्देह एक आश्चर्य जनक बात है और निशान है। तो इस प्रकार यह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है जो वह हर एक अवसर पर जमाअत के ऊपर फ़रमाता रहता है और हमारे ईमानों को बढ़ाता है। प्रत्येक कार्य के लिए अल्लाह तआला ने समय निश्चित किया हुआ है और जब वह समय आता है तो अल्लाह की कृपा से वे काम हो जाते हैं। जब अल्लाह तआला ने चाहा कि यह मस्जिद बने तो सारी रुकावटों के बावजूद मस्जिद बनाने की अल्लाह तआला ने हमें तौफ़ीक़ दी और इस्लाम का पैग़ाम इस देश में पहुंचाने का प्रथम केन्द्र स्थापित हो गया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि केवल एक केन्द्र अथवा मस्जिद समूचे देश में इस्लाम की शिक्षा फैलाने के उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकती। परन्तु यह बात विश्वस्त है कि इसके साथ जापान में इस्लाम का वास्तविक पैग़ाम पहुंचाने की नींव रख दी गई है। मैं कुछ लोगों की भावनाएँ भी बयान करूंगा जिससे पता चलता है कि जापानियों ने अहमदिया जमाअत के द्वारा बनाई गई वास्तविक इस्लाम की शिक्षा को किस प्रकार देखा और यह होना था, क्यूँकि आँहज़रत सलल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ के द्वारा ही यह निश्चित था। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जिस प्रकार पूरे विश्व के देशों में इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पहुंचाने की तड़प प्रकट फ़रमाई तथा इसके लिए प्रयत्न भी फ़रमाए, इसी प्रकार जापान के सम्बंध में भी फ़रमाया कि जापानियों के लिए एक पुस्तक लिखी जाए और किसी सुगम एंव सरल भाषी जापानी को एक हज़ार रुपए देकर अनुवाद कराया जाए तथा फिर उसकी दस हज़ार प्रतियाँ छापकर जापान में प्रसारित कर दी जाएँ। आपने यह भी फ़रमाया कि जापान में नेक प्रकृति के लोग अहमदियत क़बूल करेंगे। अलहमदु लिल्लाह, कि आज क़ुरआन-ए-करीम के अनुवाद सहित हज़ारों की संज़्या में जमाअत की ओर से जापानियों के लिए, उनकी भाषा में लिट्रेचर तैय्यार हो रहा है और अब तो इस मस्जिद के साथ अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की

इच्छा पूर्ति के लिए ऐसे द्वार खोले हैं कि करोड़ों तक इस्लाम की शिक्षा पहुंच रही है। जैसा कि मैंने बताया कि लोगों की भावनाएँ पेश करूंगा जिसके द्वारा लोगों की इस्लाम के विषय में सोच बदल गई है, पहले कुछ दूसरा विचार था अब बिल्कुल बदल गया है और उन्होंने उसी समय कहा कि मस्जिद के उद्घाटन और समारोह में शामिल होकर हमें इस्लाम की शिक्षा का ज्ञान हुआ है तथा इस्लाम के विषय में हमारी कुधारणाएँ दूर हुई हैं। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि यदि इस्लाम का परिचय कराना हो तो मस्जिद बना दो, लोगों का ध्यान आकर्षित होगा। यह बात बड़ी शान के साथ पूरी होती हमें प्रत्येक स्थान पर दिखाई देती है और जब इंसान देखता है कि किस प्रकार लोगों की काया पलटी है तो आश्चर्य होता है। जुमा के दिन जापानी मेहमान मस्जिद में आए हुए थे, पहले अनावरण था, कुछ लोग बाहर खड़े थे फिर वे भीतर आकर मस्जिद में भी बैठ गए और खुत्बः भी सुना और हमें नमाज़ पढ़ते हुए भी देखा। लगभग उनन्चास पचास जापानी मेहमान थे जिन्होंने खुत्बः सुना जिनमें शंतोइज़्म के मानने वाले, बुद्धिस्ट तथा ईसाई गुरुजनों के अतिरिक्त उस क्षेत्र के मेम्बर पार्लिमैंट, प्रोफ़ैसर्स तथा अन्य विभागों से सम्बंधित लोग सम्मिलित थे। इन शामिल होने वालों की जो भावनाएँ हैं, वे बताता हूँ।

एक साहब हैं Osamu जो Church of Jesus Christ के डायरैक्टर ऑफ़ पब्लिक एज़्फ़ैयर्ज़ हैं, वे कहते हैं कि हमें आशा है कि मस्जिद जापानियों तथा इस्लाम के बीच एक पुल की भूमिका निभाएगी।

फिर एक अन्य प्रीस्ट जिनका नाम Taijun Sato (ताई जॉन सातो) है, वे कहते हैं कि एक बुद्धिस्ट के रूप में मस्जिद में प्रवेश करके बड़ा अच्छा लगा। हमारी तो यह धारणा थी कि ग़ैर मुस्लिम तथा बुद्धिस्ट के रूप में मस्जिद में प्रवेश निषेध है परन्तु न केवल यह कि स्नेह के साथ हमारा स्वागत किया गया बल्कि नमाज़ और ख़ुत्बः में शामिल होकर हमें हार्दिक प्रसन्नता हुई। इस्लाम के विषय में हमारी धारणा बदल गई।

सिटी पार्लिमैंट के मेम्बर कहते हैं कि हम अपने इलाके में मस्जिद के निर्माण का स्वागत करते हैं। हमें आशा है कि अहमदिया जमाअत के निश्चय के अनुसार यह मस्जिद मानवता से प्रेम करने वालों तथा समाज सेवा पर विश्वास रखने वालों का केन्द्र बनेगी।

फिर Ishinomaki(इशीनोमाकी) सिटी के मेम्बर पार्लिमैंट हैं, एक हज़ार किलोमीटर की यात्रा करके मस्जिद के समारोह में भाग लेने के लिए आए थे। कहते हैं यह सुन्दर मस्जिद देखते ही मेरी यात्रा की सारी थकान दूर हो गई। उन्होंने कहा कि जापान की अहमदिया जमाअत ने भूचाल के समय सेवा के माध्यम से जो नेक नामी कमाई है, आशा है कि यह मस्जिद उस नेक नामी को बढ़ाने का कारण बनेगी।

फिर Aichi ऐजूकेश्नल युनीवर्सिटी के प्रोफ़ैसर हैं, मैनीसाकी हीरोको साहब (Minesaki Hiroko) यह कहते हैं कि जापान में अहमदिया जमाअत की मस्जिद का निर्माण अति आवश्यक था। दुनिया में इस्लाम का सुन्दर रूप दिखाने के लिए अहमदिया जमाअत की भूमिका बहुत विशेष है। हम आशा करते हैं कि इस मस्जिद के द्वारा जमाअत का परिचय और अधिक होगा तथा विश्व में अमन एंव शांति फैलेगी।

शनिवार की शाम को वहाँ एक reception भी था मस्जिद के संदर्भ में, मस्जिद के आंगन में ही। इस आयोजन में भी लगभग 109 जापानी मेहमान तथा आठ अन्य विदेशी मेहमान सम्मिलित हुए। इन मेहमानों में अध्यक्ष ए एम ए सिटी इन्टर नैशनल ऐसोसिएशन, पार्लिमैंट मेम्बर्ज़, सिटी मेम्बर पार्लिमैंट, डायरैक्टर ऑफ़ इन्टर नैशनल टूरिज़्म, प्रेज़िडैंट, प्रीस्ट ऑफ़ सोटो टैम्पिल, प्रोफ़ैसर्ज़, डाक्टर्स, टीचर्स, वकील तथा अन्य विभिन्न वर्गों से सम्बंध रखने वाले लोग शामिल थे।

एक बुद्धिस्ट प्रीस्ट कहते हैं जो इसमें शामिल हुए कि जमाअत अहमदिया के इमाम का आगमन बड़े अच्छे समय पर हुआ जबकि हम पैरिस के आतंक के बाद एक प्रकार की अशांत अवस्था में लिप्त थे। कहते हैं कि जिस

सुन्दरता तथा सरल भाषा में उन्होंने बात की है तथा इस्लाम का परिचय दिया, इससे यह आवेश जो हमारे दिलों में इस्लाम के विषय में था, समाप्त हो गया। जमाअत अहमदिया के इमाम का आगमन तथा इस मस्जिद के निर्माण ने हमारी शंका एंव घबराहट को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया।

फिर एक वकील हैं Ito Hiroshi (ईतो हीरोशी) साहब उन्होंने विभिन्न अवसरों पर क़ानूनी सहयोग ज़ी दिया था, यह कहते हैं कि यह मेरे जीवन का सर्वश्रेष्ट दिन है। कहते हैं कि जमाअत अहमदिया के इमाम की समस्त बातें सत्य पर आधारित थीं। जहाँ उन्होंने शांति एंव विनम्रता का उपदेश दिया है वहीं उन्होंने न्याय एंव इंसाफ़ को बढ़ावा देने की बात भी की है जो बड़ी ही अच्छी बात है तथा इसकी आवश्यकता है।

एक यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी थे। कहते हैं कि मेरा कुटुम्ब बुद्धिस्ट प्रीस्ट का कुटुम्ब है तथा मेरा घर टैम्पिल है, मुझे इस्लाम में बड़ी रूचि थी फिर भी कभी अवसर नहीं मिला कि किसी मुसलमान से बात कर सकूँ। किताबों से जो मिल सका, वह पढ़ा। इस प्रकार आज इस उद्घाटन समारोह में उपस्थित होकर तथा अहमदिया जमाअत के इमाम की बातें सुनकर मुझे इस्लाम की वास्तविक छाया दिखाई दी तथा एक नया द्वार मुझ पर खुला है।

एक महिला Yuki Sangsaki (यूकी संगसाकी) साहिबा कहती हैं कि इस वैभव शाली समारोह पर आमन्त्रण के लिए हार्दिक धन्यवाद देती हूँ। इस नगर में इतनी विशाल मस्जिद का बनना हमारे लिए भी बड़े हर्ष की बात है। मैं एक यूनीवर्सिटी की छात्रा हूँ तथा विभिन्न धर्मों पर अनुसंधान कर रही हूँ। इस समारोह में शामिल होने के बाद मुझे आभास हुआ कि इस्लाम के विषय में हमारा ज्ञान बड़ा तुच्छ है जिसके कारण हम कुधारणाओं में लिप्त हैं। जमाअत अहमदिया के इमाम का सम्बोधन इस युग की आवश्यकता है। मैंने इस सम्बोधन के द्वारा बहुत कुछ सीखा है। हम जापानी लोग, इस्लाम के विषय में अधिक नहीं जानते बल्कि इस्लाम से भयभीत हैं परन्तु आज के सम्बोधन से पता चला कि इस्लाम वास्तव में क्या चीज़ है। मस्जिद के बनने के बाद मैं समझती हूँ कि इस प्रकार के अवसर मिलते रहेंगे। अहमदिया जमाअत के इमाम तथा इनकी जमाअत से मिलने का अवसर मिला। परस्पर प्रेम, अमन और शांति मुझे इनके चेहरों पर दिखाई दी तथा इनसे परिचय के बाद मुझे इनमें मुहब्बत और प्यार दिखाई दिया।

एक अन्य जापानी दोस्त टोयासा कोराई साहब कहते हैं कि आज इस आयोजन में शामिल होने जमाअत अहमदिया के इमाम की बातें सुनने से इस दुनिया के अमन के बारे में सोचने का अवसर मिला। इस अवसर की उपलब्धि के लिए मैं अंतर्मन से आभारी हूँ। जमाअत अहमदिया के इमाम ने केवल शांति के विषय में ही बात की तथा विश्व को गुप्त सम्भावनाओं से भी अवगत कराया। अहमदिया जमाअत के ख़लीफ़ः ने हमारी उन शंकाओं को भी दूर किया कि मुसलमान विश्व में अपना अधिकार जमाना चाहते हैं। मैं बार बार यही कहूँगा कि हमें इनके साथ मिलकर अमन के लिए काम करना चाहिए अब हमारा कर्तव्य है कि हम इस्लाम के विषय में पढ़ें तथा इसको समझें। इसी प्रकार एक जापानी दोस्त जो स्कूल टीचर हैं, कहते हैं कि अहमदिया जमाअत के लोगों ने कठिन प्रस्थितियों में हमारी सहायता की। यह बात मैं पहले नहीं जानता था, यहाँ बहुत से सम्बोधन कर्ताओं से मैंने यह बात सुनी कि विभिन्न भूचालों में, सूनामी के दिनों में अहमदिया जमाअत ने सहायता की है। अब मैं आज के बाद अपने स्कूल के बच्चों को कह सकता हूँ कि यह लोग भयानक नहीं। कहते हैं कि अहमदिया जमाअत के ख़लीफ़ः ने बड़े सरल शब्दों में इस्लाम के विषय में बयान किया, उनकी बातें सुगमता पूर्वक समझ में आने वाली थीं। फिर एक दोस्त जो इस आयोजन में शामिल हुए कहते हैं कि इस समारोह में शामिल होकर अहमदिया जमाअत के इमाम का सम्बोधन सुनने के पश्चात मुझे पता चला है कि हमें इस्लाम के मूल सिद्धांतों से अवगत होने की बड़ी आवश्यकता है। जापान एक टापू है तथा यहाँ के लोग भी इसी प्रकार बाहर की दुनिया अनभिज्ञ एंव अपरिचित हैं इसी कारण से वे इस्लाम

के सम्बंध में आतंकवादी चरित्र के परिचय से आगे बढ़ने का प्रयास नहीं करते। मैं आशा करता हूँ कि अहमदिया जमाअत के आगमन तथा इस मस्जिद के निर्माण द्वारा इस छवि के बदलने में सकारात्मक योगदान मिलेगा।

एक छात्र कहते हैं कि इमाम जमाअत अहमदिया का सम्बोधन सुनकर मैं बड़ा भावुक हो गया था। निःसन्देह उनके शब्द दिलों को बदलने वाले हैं। फिर कहते हैं कि जमाअत अहमदिया के इमाम ने बताया कि कट्टर पंथी बड़े घनाओने काम करते हैं परन्तु इस्लाम की वास्तविक शिक्षा तो बड़ी अच्छी हैं इससे पता चलता है कि मीडिया जो इस्लाम के बारे में बताता है वह वास्तविकता से भिन्न है।

हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बहुत से आदरणीय लोगों की ईमान वर्धक भावनाएँ बयान फ़रमाईं। फिर फ़रमाया-

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मीडिया के द्वारा भी मस्जिद के उद्घाटन की बड़ी चर्चा हुई तथा विस्तृत रूप में जापानियों तक इस्लाम का सन्देश पहुंचा। मीडिया के साथ मेरे चार इन्टर व्यूज़ हुए, तीन तो यहीं मस्जिद के लिए तथा एक टोकियो में। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर पाँच टी वी चैनल्ज़ तथा विभिन्न समाचार पत्रों के प्रतिनिधि तथा पत्रकार आए थे। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, समाचार पत्रों के द्वारा भी अल्लाह तआला की कृपा से बड़ा प्रचार हुआ।

फ़रमाया- इस प्रकार टी वी चैनल्ज़ के द्वारा तथा इन्टर नैट और वैबसाईट के द्वारा सामूहिक रूप से इस मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर जो समाचार प्रकाशित हुए हैं उनके द्वारा लगभग पाँच करोड़ बीस लाख लोगों तक इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा है। तो यह अल्लाह तआला के समर्थन एंव सहायता के दृश्य हैं जो मस्जिद के द्वारा इस्लाम का वास्तविक रूप पहुंचाने के कारण हमें नज़र आए।

हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- टोकियो में भी एक आयोजन था, रिसैप्शन था जिसमें 63 जापानी अतिथि शामिल हुए जिसमें एक बुद्धिस्ट समुदाय के चीफ़ प्रीस्ट थे। नी होन यूनिवर्सिटी के चांसलर थे। विख्यात कवि, बिज़नेस एडवाइज़र मिस्टर मार्टिन थे। जापान के दूसरे बड़े अख़बार असाई के चीफ़ रिपोर्टर थे। इसी प्रकार जीवन के विभिन्न वर्गों के सम्बंध रखने वाले लोग शामिल हुए।

डी होन यूनिवर्सिटी के चांसलर कहते हैं कि मैं सोचता रहा कि आप हमें क्या बताएँगे। परन्तु बीस मिन्ट में आपने पिछले इतिहास तथा आगे आने वाले हालात को व्यापक रंग में तथा यथार्थ एंव संदर्भों सहित बात की है, युद्ध के कुप्रभाव से अवगत कराया तथा युद्धों से बचने के लिए सचेत किया। बड़े ही कम समय में इस्लाम की शिक्षा भी बता दी। मेरे सम्बोधन के विषय में कहते हैं कि यह पूरा सम्बोधन अंग्रेज़ी तथा जापानी भाषा में पूरे जापान में फैलाना चाहिए।

एक दोस्त जो बिज़नेस एडवाईज़र हैं तथा कवि भी हैं, उन्होंने एक किताब लिखी थी, अमन तथा मुहब्बत के विषय पर, यह मुझे मिले भी थे, कहने लगे कि जो कुछ मैंने किताब में लिखा था आज आपने उस पर मुहर लगा दी है।

हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस अवसर के भी अनेक आदरणीय व्यक्तियों के अनुभव बयान फ़रमाए, फिर फ़रमाया-

अल्लाह तआला की कृपा से मस्जिद के उद्घाटन तथा दौरे के, जैसा कि मैंने संक्षेप में बयान किया है, बड़े सकारात्मक परिणाम ज़ाहिर हुए हैं। अल्लाह तआला जापान की जमाअत को भी तौफ़ीक़ दे कि जो विस्तृत परिचय हुआ है मस्जिद के कारण, उसको अत्यधिक फैलाते चले जाएँ तथा जापानियों को जो अहमदिया जमाअत से आशाएँ हैं उन पर पूरा उतरने का वे प्रयास भी करें तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अभिलाषा के अनुसार वहाँ

अहमदियत का सन्देश भी शीघ्रता से फैलाने का प्रयत्न करें।

फ़रमाया- मौलवियों की ईष्या तथा द्वेष पाकिस्तान में समय समय पर प्रकट होता रहता है। जमाअत की प्रगति देखकर उनकी ईर्षा की आग भड़कती रहती है। पिछले दिनों एक बड़ा अत्याचारी एंव विनाश कारी कुकर्म उन मौलवियों की ओर से तथा कट्टर पंथियों की ओर से पाकिस्तान के जेहलम में हुआ जहाँ अहमदी की चिप बोर्ड की फ़ैक्ट्री को आग लगा दी गई और उनका प्रयास यह था कि जो अहमदी कर्मी हैं तथा मलिक हैं उनको भी भीतर ही ज़िन्दा जला दिया जाए। परन्तु अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है कि इसमें सफल नहीं हो सके लेकिन इस प्रकार अर्थिक हानि तो हुई। 1974 में भी इन लोगों ने आगें लगाईं तथा अहमदियों को संकट में डालने का प्रयास किया परन्तु आगें लगाने वालों की, अहमदियों को परीक्षा में डालने वालों की कोई भी इच्छा पूरी नहीं हो सकी। हमने देखा कि अभिलाषाएँ उनके दिलों में ही रह गईं। अहमदियों को भीख का कटोरा पकड़ाने का प्रयास करने वालों को हमने भीख मांगते देखा। यह तो अल्लाह तआला का व्यवहार जमाअत के साथ होता है। अतः यह परीक्षा हमारे ईमानों को हिलाने वाली नहीं बल्कि दृढ़ करने वाली है।

यह फ़ैक्ट्री जो थी, चिप बोर्ड की, ये हज़रात साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब के बेटे साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुनीर अहमद साहब की थी और उनके निधन के पश्चात उनकी संतान इसकी स्वामी थी। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि जिस प्रकार ऐसी हानियों पर एक मोमिन की अभिव्यक्ति होनी चाहिए, वही अभिव्यक्ति इन लोगों ने की तथा शुक्र की बातें ही इन लोगों के मुंह से निकलती रहीं। अल्लाह तआला ने उनके अहमदी कार्य-कर्ताओं की जान व माल को ज़ी सुरक्षित रक्खा तथा उन्हें भी बचाया तथा महिलाओं एंव बच्चों को भी बचाया और उनकी मर्यादाएँ भी सुरक्षित रक्खीं। मिर्ज़ा नसीर अहमद तारिक़ जो मिर्ज़ा मुनीर अहमद साहब के बड़े बेटे हैं इस फ़ैक्ट्री के प्रमुख थे, फ़ैक्ट्री के भीतर ही रहते थे। इसी प्रकार उनका बेटा भी जो फ़ैक्ट्री में काम करता है, उसका घर भी फ़ैक्ट्री के अन्दर था, सबको अल्लाह ने सुरक्षित रक्खा। बहुत से अहमदी कर्मी जो थे वे भी इधर उधर जंगल में छिपते रहे। उनको भी किसी प्रकार ढूंड कर बाद में ख़ुद्दाम ने सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया। क़मर अहमद जो गेट के सैक्योरिटी इंचार्ज थे, उनको पुलिस ने गिरफ़तार कर लिया, वे जेल में हैं, उनपर क़ुरआन के अपमान के बड़े घोर आरोप लगाए गए हैं, अल्लाह तआला उनकी रिहाई का भी सामान फ़रमाए।

मिर्ज़ा नसीर अहमद साहब की पत्नि और बहू तथा उनके बच्चों ने भी जो संतोष एंव शुक्र की अभिव्यक्ति की है, वह भी सज़्मान योग्य है। इस प्रकार एक दृष्टि से शुभ सूचना भी है कि कुछ ग़ैर अज़ जमाअत, यह बदलाव इस बार पाकिस्तान में देखने में आया कि कुछ ग़ैर अज़ जमाअत ने भी इस अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाई है तथा टी वी प्रोग्राम हुआ जिसमें वहाँ के डी पी ओ तथा राजनीतिज्ञयों ने इस बात का इज़हार किया कि वे न्याय करेंगे तथा दोषियों को पकड़ेंगे। प्रोग्राम करने वालों ने भी इस अत्याचार के विरुद्ध जो कज़ेयर था अथवा जो प्रोग्राम को कंडक्ट कर रहा था, उसने भी इस अत्याचार के विरोध में खुलकर बात की है। इसी प्रकार उस फ़ैक्ट्री को आग लगाने के बाद उन्होंने हमारी दो छोटी जमाअतें, काला गूजरा और महमूदा की मस्जिदों पर आक्रमण किया। मौलवियों ने मस्जिद की सफ़ें तथा सामान बाहर निकाल कर उसको आग लगाई, फिर मस्जिद पर क़बज़ा किया। पुलिस ने उनको बाहर निकाल दिया और वहाँ ताला लगा दिया। अल्लाह तआला वहाँ सब अहमदियों को सुरक्षित रक्खे। अल्लाह करे कि पाकिस्तान में भी न्याय की स्थापना हो और फ़ैक्ट्री के मज़दूरों को भी, जो वहाँ काम करते थे और अब उनका रोज़गार नष्ट हो गया है। अल्लाह तआला उनके भी रोज़गार के अच्छे साधन उपलब्ध फ़रमाए। आमीन